thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 49 15 से 21 जनवरी, 2015 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 मा. कृ.-10

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 22 जनवरी को हरियाणा के पानीपत में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ कार्यक्रम की शुरुआत करना आर्य समाज की एक बहुत बड़ी उपलब्धि है

– स्वामी आर्यवेश

सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में बेटी बचाओ एवं महिला सशक्तिकरण सम्मेलन का भव्य आयोजन

लड़कों से किसी भी क्षेत्र में कम नहीं लड़कियां
– संतोष यादव (पद्मश्री पर्वतारोही)

नारी अस्तित्व को बचाने के लिए हमारा संघर्ष जारी रहेगा
– पूनम आर्या, राष्ट्रीय अध्यक्ष, बेटी बचाओ अभियान

आर्य समाज हमेशा देश के नव-निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाता है
– मनीष ग्रोवर, विधायक रोहतक

बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ सरकार की एक जोरदार पहल है
– प्रतिभा सुमन

बेटियों को बचाने की हमारी लड़ाई लम्बी चलेगी पर अन्त में जीतेंगे भी हम
– प्रवेश आर्या, संयोजक बेटी बचाओ अभियान

कन्या भ्रूणहत्या नहीं रूकी तो बिगड़ जायेगा सामाजिक सन्तुलन
– जयवन्ती श्योकन्द रिटायर्ड, आई. ए. एस.

11 जनवरी, 2015, आर्य समाज के सबसे सशक्त युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं बेटी बचाओ अभियान के संयुक्त तत्वावधान में 11 जनवरी, 2015 को प्रात: 11 बजे से 2 बजे तक इन्वीटेशन गार्डन, रोहतक में बेटी बचाओ एवं महिला सशक्तिकरण सम्मेलन का आयोजन किया गया। आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के प्रधान तेजस्वी युवा संन्यासी स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता रोहतक के विधायक श्री मनीष ग्रोवर ने की।

मुख्य वक्ताओं के रूप में बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या, रिटायर्ड (आई. ए. एस.) श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द, रोहतक के सिविल सर्जन डॉ. शिवकुमार, श्री सुरेश राठी रहे। मुख्य अतिथि के रूप में भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा सुमन, पद्मश्री से सम्मानित, पर्वतारोही सुश्री संतोष यादव तथा बलराज कुण्डू (समाजसेवी) ने कार्यक्रम में शिरकत की। इस पूरे कार्यक्रम का संयोजन बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने किया।

अपने मुख्य उद्बोधन में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि बेटियों को बचाने की मुहिम सर्वप्रथम आर्य समाज ने प्रारम्भ की थी। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारम्भ किया जाने वाला बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान आर्य समाज की बहुत बड़ी उपलब्धि है। केन्द्र सरकार द्वारा प्रारम्भ किए गए बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ,

स्वच्छता मिशन को पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन भी दिया तथा आर्य समाज के लाखों कार्यकर्ताओं को इस मुहिम से जुड़ने का आह्वान भी किया। स्वामी जी ने कहा कि 2005 में सर्वप्रथम इस मुद्दे पर आर्य समाज की पहल से ही महर्षि दयानन्द के जन्मस्थान टंकारा (गुजरात) से अमृतसर तक 15 दिन की जन-जागरण यात्रा निकाली गई थी। उसके बाद पूरे देश में जागरूकता आई और हर व्यक्ति की जुबान पर बेटी बचाओ का नारा चढ़ गया।

स्वामी जी ने कहा कि कितनी विडम्बना है कि एक तरफ तो लोग दीपावली पर देवी की पूजा करते हैं वहीं दूसरी ओर जो वास्तविक देवी है उसको मां के पेट में मरवाते हैं। स्वामी जी ने चौंकाने वाले आंकड़े जब

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

बेटी बचाओ! बेटी पढ़ाओ!! देश को आगे बढ़ाओ!!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती

कन्या भ्रूणहत्या के विरुद्ध स्वामी आर्यवेश के नेतृत्व में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा आयोजित

14 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी, 2015 तक

पलवल से चण्डीगढ़ की 10 दिवसीय जन-चेतना यात्रा का कार्यक्रम

स्वामी इन्द्रवेश

क्र. सं.	प्रारम्भ	रात्रि पड़ाव	तिथि	दूरी
1	पलवल से वाया (बघोला, पृथला, गदपुरी, बलभगढ़)	फरीदाबाद	14 फरवरी, 2015 (शनिवार)	25 किमी.
2.	फरीदाबाद से वाया (पाली, धौज, सोहना, बादशाहपुर, गुड़गांव जमालपुर, पाटौदी, चिल्हड़, रेवाड़ी)	कनीना	15 फरवरी, 2015 (रविवार)	125 किमी.
3.	कनीना से वाया (महेन्द्रगढ़, माधोगढ़, डालनवास, सुरेहती, सतनाली, फरटिया, लौहारू, सिंघानी, ढिगावा, पोहकरवास, कुड़ल)	जूई	16 फरवरी, 2015 (सोमवार)	95 किमी.
4.	जूई से वाया (गोलागढ़, भिवानी, बीट्स बामला, खरक कलां, कलानौर, काहनौर, मसूदपुर बेरी, धौड़, झज्जर)	रोहतक	17 फरवरी, 2015 (मंगलवार)	125 किमी.
5.	रोहतक से वाया (टिटौली, बहुअकबरपुर, मदीना, खरकड़ा, महम, भैणी महाराजपुर, मुण्ढाल, सौरखी, ढ़ाणा, हांसी, देपल, उमरा, सुल्तानपुर, भगाना, लाडवा, डाबड़ा)	हिसार	18 फरवरी, 2015 (बुद्धवार)	100 किमी.
6.	हिसार से वाया (आर्यनगर, गुरुकुल धीरणवास, बालसमन्द डोभी, बगला, आदमपुर, भट्टू, चाहरवाल, पीली मन्दौरी, नाथूसरी चौपटा, चाडीवाल	सिरसा	19 फरवरी, 2015 (गुरुवार)	125 किमी.
7.	सिरसा से वाया (मोरीवाला, जोधकां, फतेहाबाद, रतिया धारसूलकलां, टोहाना, बिठमड़ा, नरवाना, डूमखाकलां उचाना, बड़ौदा, खटकड़, जीन्द)	जीन्द	20 फरवरी, 2015 (शुक्रवार)	130 किमी.
8.	जीन्द से वाया (पाण्डूपिण्डारा रधाना, भम्भेवा, नूरनखेड़ा बुटाना, गोहाना, मोहाना, बिघल, बडवासनी, सोनीपत, गन्नौर, समालखा, पट्टीकल्याणा, पानीपत, खरकाली, करनाल	करनाल	21 फरवरी, 2015 (शनिवार)	135 किमी.
9.	करनाल से वाया निसंग, पूण्डरी, पाई, राजौन्द, कैथल, ढाण्ड, पबनावा, मिर्जापुर, कुरुक्षेत्र, पीपली, लाड़वा, रादौर, यमुनानंगर	यमुनानगर	22 फरवरी, 2015 (रविवार)	160 किमी.
10.	यमुनानगर से वाया (नारायणगढ़ सजादपुर, बरवाला, जटौली, पंचकूला, चण्डीगढ़)	चण्डीगढ़	23 फरवरी, 2015 (सोमवार)	110 किमी.

निवेदक

आचार्य सन्तराम, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष | ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान, 9354840454 | बहन प्रवेश आर्या, महामन्त्री, 9416630916 | बहन पूनम आर्या, अध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा — बेटी बचाओ अभियान

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

।। ओ३म्।।

बेटी बचाओ! बेटी पढ़ाओ!! देश को आगे बढ़ाओ!!!

कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध

14 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी, 2015 तक आयोजित पलवल से चण्डीगढ़ की जन-चेतना यात्रा के लिए सहयोग की अपील

मान्यवर,

आपको भलीभांति मालूम है कि भारत की धर्म परायण संस्कृति में नारी को सर्वदा उच्च सम्मान दिया गया है तथा हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता वास करते हैं। किन्तु आज समाज में हो रही नारी की दुर्दशा एवं अनादर को देखकर क्या हम यह कह सकते हैं कि यह एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज है। जिस समाज में जानबूझ कर कन्या भ्रूण को माँ की कोख में ही बेरहमी से काट-छांट कर खत्म कर दिया जाता हो या कन्याओं को पैदा होते ही मार दिया जाता हो, जिस समाज में दहेज के नाम पर लाखों लड़कियां जिन्दा जला दी जाती हों तथा विविध प्रकार से महिलाओं पर अत्याचार किए जाते हों, क्या उस समाज को हम सभ्य समाज कह सकते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि आज भारत में न केवल नारी उत्पीड़न हो रहा है बल्कि नोबेल पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. अमृत्यसेन के अनुसार कन्या भ्रूण हत्या एवं कन्या शिशु हत्या के बढ़ने से भारत में लड़कियां विलुप्त होती जा रही हैं। सन् 1991 में इन विलुप्त लड़कियों की संख्या ढाई करोड़ के लगभग थी। सन् 2001 में यह आंकड़ा साढ़े तीन करोड़ को पारकर गया था और वर्तमान में भी स्थिति बदतर ही बनी हुई है।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी सम्मान के लिए उनके पढ़ने के बराबर अधिकार से लेकर जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की घोषणा करके नर-नारी समता का जो उद्घोष किया था आज उसकी धज्जियां उड़ रही हैं। अश्लीलता एवं नग्नता की शिकार नारी आज उपभोक्तावाद की आंधी में सरेआम अपनी अस्मिता बेच रही है। प्रतिदिन बलात्कार एवं छेड़छाड़ की घटनाओं के समाचारों से अखबार भरे पड़े रहते हैं। नारी जाति के प्रति इस सड़ी-गली सोच एवं मानसिकता को आर्य समाज चुपचाप नहीं देख सकता। यद्यपि समस्यायें और भी अनेक हैं किन्तु आर्य समाज ने तथा इसकी शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया है कि नारी सम्मान की सुरक्षा के लिए कन्या भ्रूण हत्या, कन्या शिशु हत्या व नारी पर होने वाले विविध अत्याचारों के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जाये तथा समाज में चेतना पैदा करने के साथ-साथ सरकार को भी इस दिशा में चेतना पैदा करने के साथ-साथ सरकार को भी इस दिशा में सख्त कदम उठाने के लिए प्रभावित किया जाये। यह प्रसन्नता की बात है कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान प्रारम्भ कर दिया है। आशा की जाती है कि सभी प्रान्तीय सरकारें भी इस दिशा में और अधिक संवेदनशील होकर कार्य करेंगी। आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध आगामी 14 फरवरी, 2015 (महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस) को हरियाणा के पलवल शहर से एक प्रभावशाली जन-चेतना यात्रा प्रारम्भ की जायेगी जो हरियाणा के सभी जिलों से होती हुई 23 फरवरी, 2015 को चण्डीगढ़ में सम्पन्न होगी। इस यात्रा में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं स्वयं सेवी संगठनों का भी भरपूर समर्थन एवं सहयोग लिया जायेगा तथा प्रमुख धर्माचार्य, आर्य संन्यासी, आर्यनेता, राजनैतिक नेता, जन प्रतिनिधि विभिन्न स्थानों पर पधार कर जनता का मार्गदर्शन कर आह्वान करेंगे।

आर्य समाज प्रारम्भ से ही समाज के ज्वलन्त मुद्दों पर अपना तेजस्वी रूख अपनाकर कार्य करता रहा है। कन्या भ्रूण हत्या एवं नशाखोरी के विरुद्ध भी देश में सर्वप्रथम आर्य समाज ने ही मोर्चा खोला था तथा महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा (गुजरात) से जलियांवाला बाग अमृतसर तक की पन्द्रह दिवसीय सर्वधर्म जन-चेतना यात्रा निकालकर देश की जनता को जगाया था। आर्य समाज की पहल पर शुरू किया गया यह बेटी बचाओ अभियान आज सभी संगठनों, राजनैतिक पार्टियों व सरकारों के घोषणा पत्र में शामिल हो चुका है। अतः प्रत्येक आर्य सामाजिक कार्यकर्ता का दायित्व बनता है कि उसे इस ऐतिहासिक यात्रा को सफल बनाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। जहां-जहां से यात्रा गुजरे वहां-वहां जन सभाओं व रैलियों में भारी संख्या में सम्मिलित होने के लिए लोगों को प्रेरित करें, अपने बैनर लेकर प्रत्येक आर्य समाज व आर्य शिक्षण संस्था कार्यक्रम में अवश्य भाग लें तथा संकल्प पत्र पर अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराकर देवें। हम उन जागरूक, यशस्वी एवं समाज के प्रति सकारात्मक सोच रखने वाले सभी सामाजिक संगठनों एवं शिक्षण संस्थाओं (स्थूल व कॉलेजों) के कर्णधारों से भी प्रार्थना करते हैं कि यात्रा को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए अपनी संस्थाओं को स्थानीय कार्यक्रमों में अवश्य शामिल करें।

यात्रा को सफल एवं प्रभावी बनाने के लिए जो महानुभाव 10 दिन का समय देकर यात्रा में शामिल होना चाहते हैं उनका स्वागत है। वे अपना नाम अविलम्ब यात्रियों की सूची में अंकित करवा लेवें। हमारी अपने समस्त दान-दाताओं एवं विशिष्ट सहयोगियों से सानुरोध अपील है कि वे अपना अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर तथा अपनी ओर से 10 दिन के लिए निःशुल्क वाहन (जीप, फोर व्हीलर आदि) ड्राईवर सहित उपलब्ध कराकर हमारा सहयोग करें। आप सभी के सहयोग से ही यह पवित्र अभियान सफल हो सकेगा। आशा है आप सभी का सहयोग अवश्य मिलेगा। आप अपना सहयोग "युवा निर्माण अभियान" के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट, मनीआर्डर निम्न पते पर प्रान्तीय कार्यालय में भेज सकते हैं।

निवेदक

आचार्य सन्तराम, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष | ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान, 9354840454 | बहन प्रवेश आर्या, महामन्त्री, 9416630916 | बहन पूनम आर्या, अध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा — बेटी बचाओ अभियान

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

शाकाहार में ही उद्धार है

– डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ

कैलिफोर्निया स्थित लोमालिण्डा विश्वविद्यालय के अध्ययन में पता चला है कि शाकाहार करने वालों का रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल स्तर नियन्त्रण में रहता है, जो उन्हें लम्बी उम्र का उपहार देता है। अध्ययन के अनुसार शाकाहारी अधिक जीते ही नहीं, वरन् उनमें शराब और सिगरेट की बुरी लत भी अपेक्षाकृत कम होती है। इस अध्ययन के प्रभाव से अब ब्रिटेन जैसे देश में शाकाहारी व्यंजन प्राप्त होने लगे हैं। कुछ अमेरिकनों ने भी अब शाकाहार लेना आरम्भ कर दिया हैं कैम्ब्रिज की प्रोफेसर प्रियंवदा गोपाल ने बताया है कि भारत में तो अब भी अपने को रईस मानने वाले कुछ हिन्दू, मुसलमान और दलित गाय का मांस खाते हैं। कुल मिलाकर 11.4 लाख टन बड़े पशुओं का मांस खाया जाता है, यहां तक कि 2012 में भारत दुनिया का 'बीफ' निर्यातक बन गया है। यह एक तस्वीर है हमारी दुर्दशा की। धन के लोभ में गाय की पूजा करने वाला भारत इस दुर्दशा को प्राप्त हो गया है। हमें याद है, हमारे समय में केवल मुसलमान ही मांस खाते थे। हमारा परिवार शुद्ध शाकाहारी था। रक्त जैसा लाल रंग वाला टमाटर भी वर्जित था। ब्राह्मण वर्ग तो इस बुराई से कोसों दूर था। ब्रज क्षेत्र में मांसाहार की कोई बात भी नहीं करता था। अर्थात् भारत की तीन बटा चार

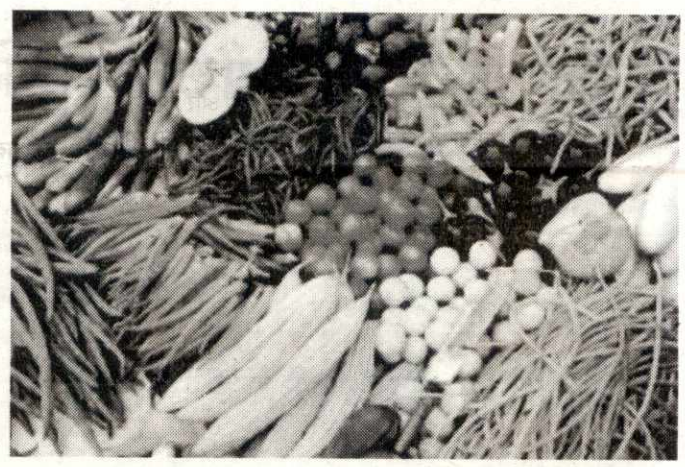

आबादी शाकाहारी थी। अब पाश्चात्य फैशन तथा होटलों की बढ़त से मांसाहार का शौक पूरा करने की ललक बढ़ रही है।

यदि हम इसको धार्मिक दृष्टि से न भी देखें, तब भी मांसाहार हमारे हित में नहीं है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता के कारण शाकाहार को एक नया बल मिला है। विश्व के कुछ बड़े वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि खाद्य संकट को एक ही सूरत में टाला जा सकता है और वह यह है कि सभी लोग आगामी चालीस वर्षों में शाकाहारी भोजन को अपना लें अर्थात् पेड़-पौधों पर आधारित भोजन-पद्धति की ओर बढ़ें। इसके सिवा और कोई चारा नहीं है। स्टाकहोम इण्टरनेशनल वाटर इन्स्टीट्यूट की रिपोर्ट यह बताती है कि दुनिया की एक-तिहाई सिचिंत भूमि का प्रयोग मनुष्य जाति के लिए खाद्यान्न पैदा करने के लिए नहीं, वरन् पशुओं के लिए चारा पैदा करने में हो रहा है। देखा जाये, तो यह उपजाऊ भूमि का दुरुपयोग है। ऐसे मनुष्य अपने ही हाथों अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। पहले इस उपजाऊ धरती का उपयोग पशुओं के लिए चारा उगाने में करते हैं, फिर उनको ही बेरहमी से मारकर मांस भक्षण करते हैं। पशुओं के साथ तो यह घोर अन्याय ही नहीं, अत्याचार भी है। समझ में नहीं आता कि इस अन्याय को किस प्रकार सहन किया जाता है। निरीह पशु, वे क्या जानें कि मानव उनका क्या करने जा रहा है। बलिपशु की तरह वे चुपचाप उसके लिए अन्याय को सहन करते रहते हैं। एक बात और है। मांसाहारी भोजन के उत्पादन के मुकाबले शाकाहारी भोजन पैदा करने में पानी का प्रयोग पांच से दस गुना तक कम होता है। दुनिया में पानी की वैसे ही कमी हो रही है, फिर हम मूर्ख लोग उसका उपयोग सीमित रूप में नहीं करते। नल टूट जाते हैं, पानी बहता रहता है। पर्यावरण का ज्ञान उन्हें है, पर अपने स्वार्थ में तथा मूर्खता से भी पानी बचाने का प्रयत्न नहीं करते। फिर क्या होगा? बादल फटेंगे और सुनामी का भी सामना करना पड़ सकता है। वर्षा के जल को एकत्र कर बचाये रखने का उपाय भी नहीं होता। वस्तुतः पानी का प्रयोग अति उपयोगी योजनाओं में करना ही बुद्धिमानी है। आखिर करना तो वही पड़ेगा, पर तब तक समय अपने हाथ से मुट्ठी में बालू की तरह फिसल जायेगा।

निष्कर्ष यह है कि पर्यावरण तथा स्वास्थ्य की दृष्टि से मांस के उपयोग में तेजी से कमी करने की आवश्यकता है। बहुत से पैसे वाले लोग भोजन, ईंधन, पानी तथा अन्य संसाधनों का दुरुपयोग करते हैं। समस्या उचित बंटवारे की भी है। गरीबी रेखा से नीचे लोगों को भी आखिर भोजन और पानी आदि संसाधनों की आवश्यकता होती है। उनका हमें अवश्य ध्यान रखना है। विश्व अर्थ व्यवस्था में भी बदलाव लाने की आवश्यकता है। अभी नहीं तो और आगे चलकर विवश होकर खान-पान में परिवर्तन करना ही होगा। आवश्यकता से अधिक पशु उत्पादों के उपयोग का भीषण संकट हमारी धरती पर मंडरा रहा है। फलस्वरूप मानव का अस्तित्व भी खतरे में है।

अतः भविष्य के होनहार बालकों को यह समझाया जाना अपेक्षित है कि वे मांसाहार से एकदम दूर रहें। चालीस वर्ष बाद तो विवश होकर यह छोड़ना ही होगा, तो क्यों न अभी से उसका अभ्यास किया जाये। धार्मिक दृष्टि से तो यह पहले ही त्याज्य था, अब सामाजिक न्याय की दृष्टि से भी विवश होकर इसका त्याग करना पड़ेगा। अतः पहले से ही संभल जाना उचित है। इसी में सभी की भलाई है। बच्चों के पास अधिक साफ सुथरी बुद्धि होती है। वे निर्दोष होते हैं। अतः पर्यावरण सुधार में वे सबसे बड़ा योगदान दे सकते हैं।

– द्वारा साधना सिन्हा, एम. ए., 'मुस्कान', सी-56, सैक्टर-40, नोएडा-201303 (उ. प्र.)

thearyasamaj.org

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

...गतांक से आगे

राष्ट्रीय नीति बनाकर ही नशाखोरी से देश को मुक्ति दिलाई जा सकती है। सर्वप्रथम तो यह मानसिकता बननी चाहिए कि नशाखोरी से देश को लाभ अधिक हो रहा है, अथवा हानि। यदि हानि हो रही है तो बजाय किस्तों के, एकमुश्त नशाखोरी से निपटने का राष्ट्रीय अभियान चलना चाहिए। बेरोजगार होने वाले श्रमिकों के लिए वैकल्पिक योजना तैयार करनी होगी। राजस्व की जो हानि होगी, उसकी भरपाई के लिये भी कारगर प्रबन्ध करने होंगे। जब पूरे राष्ट्र में नशाखोरी पर प्रतिबन्ध होगा तो तस्करों से निपटना भी आसान हो जायेगा। प्रतिबन्ध से अपराधों का, दुर्घटनाओं का, रोगों का ग्राफ भी नीचे गिरेगा जो विकट समस्याएं हैं। इससे करोड़ों परिवारों की आर्थिक व सामाजिक स्थिति में भी सुधार होगा।' नशाखोरी पर मुक्कमल और असरदार प्रतिबन्ध तभी लग सकता है जब संविधान में संशोधन कर स्पष्ट किया जायेगा कि अमुक व्यवसाय समाज व राष्ट्र के हित में न होने के कारण प्रतिवंधित रहेंगे। जब तक ऐसा न हो तब तक देश की सामाजिक, धार्मिक संस्थाओं व पेशेवर एन. जी. ओ. को मैदान में उतर कर नशाखोरी प्रतिबन्धन के लिए जहां एक ओर सरकार व प्रशासन पर दबाव बनाना होगा वहीं दूसरी ओर जन-जागरण अभियान चला कर एक आम व्यक्ति को सचेत करना होगा। यह देश जिस आर्य संस्कृति व सभ्यता का वाहक है वहां नशाखोरी के लिए कोई स्थान नहीं रहना चाहिए। परिवारों को यदि अनचाहे मातम से मुक्त रखना है, कारागारों को अपराधियों के असह्य बोझ से मुक्त रखना है और अस्पतालों को मरीजों की भीड़ से मुक्त रखना है तो नशाखोरी को हर स्तर से उखाड़ फेंकना होगा। राष्ट्र का जितना धन, श्रम, समय नशेड़ियों पर खर्च होता है उसका आकलन यदि किया जाये तो चौंकाने वाले आंकड़े सामने आयेंगे। नशेड़ी राष्ट्रीय विकास में बाधक हैं और अनेक समस्याओं के लिए सीधे-सीधे जिम्मेदार भी हैं अत: वे देश के लिए वरदान नहीं अभिशाप हैं। नशाखोरी अशिक्षित और पिछड़े-आदिवासी समाजों में ही अंकुरित नहीं हो रही है बल्कि शिक्षित व उन्नत सभ्य समाज में भी इसे 'स्टेट्स सिम्बल' मान लिया गया है। व्यस्क नागरिक ही नहीं महिलाएँ और बच्चे भी इसके शिकंजे में फंसते जा रहे हैं। सरकारी आयोजनों में धड़ल्ले से शराब परोसी जाती है। लगभग आधे सांसद और विधायक किसी न किसी नशे के अभ्यस्त होते हैं। पुलिस और सेना में शराब का आम प्रचलन है। जहाँ भी भ्रष्टाचार का बोलबाला है वहाँ नशाखोरी भी सिर चढ़कर बोलती है। यहाँ तक कि सरस्वती के पवित्र मन्दिरों में अर्थात् स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालयों व छात्रावासों में भी शराब पहुँच चुकी है। हमने देखा उज्जैन के भैरो मंदिर में शराब का चढ़ावा चढ़ता है। जब देवता इससे अछूते नहीं तो आम आदमी की बात क्या की जाये? जाहिर है कि नशाखोरी की जड़ें बहुत गहराई तक जा पहुँची हैं और उसके खतरे भी जग-जाहिर हैं अत: इससे राष्ट्र की गरिमा व अस्मिता को बचाना हम सबका राष्ट्रधर्म बन चुका है। राष्ट्र अपने प्रत्येक नागरिक से अपेक्षा रखता है कि वह खुद, जहां भी वह खड़ा है, इसके विरुद्ध अपनी जंग शुरू करें।

शोषण

धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और वैचारिक विषमताओं के कारण भारतीय समाज के हर स्तर पर शोषण का साम्राज्य स्थापित है। इस शोषण से मानव ही नहीं, पशु, जीव-जन्तु और वनस्पति भी आहत एवं त्रस्त है। यह शोषण हमारे जीवन को दीमक बनकर कब से चाटना शुरू करता है इसका हमें अहसास ही नहीं हो पाता। शोषण मानवीय गरिमा का, स्वाभिमान का, स्वाधीनता का, संवर्द्धन का, हनन करता है। शोषण से मानवीय जीवन के सत्यं, शिवं, सुन्दरम पक्ष का विनाश होता है। शोषण से पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की मर्यादा ही भंग नहीं होती अपितु इनका लक्ष्य और सिद्धि भी खटाई में पड़ जाती है। शोषण के कारण, परिस्थितियाँ बदल जाने पर, अच्छाई भी बुराई बन जाती है, धर्म-अधर्म बन जाता है, समाधान समस्या बन जाती है, वरदान अभिशाप बन जाता है। अनेक भारतीय अभारतीय समुदायों, सम्प्रदायों, सभ्यताओं, मान्यताओं के कारण हमारा समाज एक मिश्रित समाज है, वर्णशंकर समाज है, बहुलतावादी समाज है अत: यहाँ विषमताओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। इस दृष्टि से विविधता में एकता, समरसता, समानधर्मिता के दर्शन को सामने रखकर हमें ऐसी जीवनशैली विकसित करनी होगी जिसमें विषमताओं को कम से कम गुंजायश हो, शोषण की कम से कम गुंजायश हो। यह तभी सम्भव है जब देश का हर नागरिक अपने इस युग धर्म को समझे और ईमानदारी से उसका पालन करने को वद्धपरिकर हो।

धार्मिक शोषण

धार्मिक विषमता से तात्पर्य उन धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक विषमताओं से है जो अपने अनुयायियों के नैसर्गिक अधिकारों का हनन, हरण व शोषण करती हैं। धर्म का अर्थ जानने-समझने से पूर्व ही कोख में पल रहे बच्चे को हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई मान लेना अथवा बना लेना, उसकी भावना, विचारों और निर्णयों के विरुद्ध एक साजिश है जो अमानवीय कृत्य है। किसी को संस्कारित करने का हक प्रत्येक पंथ को है लेकिन फैसला लेने का अधिकार सम्बद्ध पक्ष का होना चाहिए। हर सम्प्रदाय जब अस्तित्व में आता है तब इसी सन्मार्ग को अपनाता है लेकिन एक-दो पीढ़ी उपरान्त स्वयं ही इस प्रशस्त मार्ग का त्याग कर उन्मार्ग पर अग्रसर होने लगता है।

धर्म मनुष्य को अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, संतोष, शौच, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान की शिक्षा देता है और अपने हर अनुयायी से अपेक्षा रखता है कि अपने इस शाश्वत धर्म का पालन करें। इस सीधे, सरल, सपाट मार्ग के बजाय लोगों को चढ़ावा, तीर्थाटन, कुम्भ, हज, श्राद्ध-तर्पण, कांवड़, फलित-ज्योतिष, तन्त्र-मन्त्र, अवतारवाद, मूर्तिपूजा, अनेकेश्वरवाद के झमेलों में फंसाना और उनकी आस्था, श्रद्धा, विश्वास का दोहन करना एक तरह का धार्मिक शोषण है। इससे धर्म अपना मूल स्वभाव और प्रकृति खोकर एक प्रदर्शनात्मक, प्रतिस्पर्धात्मक और

व्यवसायात्मक विचारधारा का स्वरूप ग्रहण कर लेता है। शंकराचार्य और शिरड़ी-साईं का विरोध धर्म को इसी परिणति की ओर धकेल रहा है।

धर्म मानवता का पक्षधर है, सत्यं, शिवं, सुन्दरम का उपासक है, मर्यादा और गरिमा का रक्षक है। लेकिन इसके विपरीत धर्म के नाम पर सम्प्रदायों के रूप में, जातियों के रूप में, भाषा के रूप में, अनुष्ठानों के रूप में, तीर्थों के रूप में, बस्तियों के रूप में, उपासना स्थलों के रूप में, बाह्य चिन्हों को धारण करने के रूप में, शादी-विवाहों के रूप में, खान-पान के रूप में पहनावे के रूप में, अलग इतिहास लेखन व अलग-अलग राजधर्म के रूप में, श्मशानों के रूप में मानवता को न केवल विभाजित किया जाता है, न केवल प्रतिस्पर्धा में खड़ा किया जाता है बल्कि आपस में लड़वाया, लुटवाया, मरवाया भी जाता है। धर्म एक सकारात्मक विचारधारा है, एक आध्यात्मिक दर्शन है, एक आदर्श जीवनशैली है अत: उससे अलगाव और भटकाव के इतने रूप व स्वर पैदा होना निश्चय ही शोचनीय स्थिति पैदा करते हैं। इससे निश्चय ही मानवता के उज्ज्वल पक्ष का शोषण हो रहा है।

धर्म यदि अपने आपमें पूर्ण है, सशक्त है, पवित्र है तो उसे न तो सत्ता-प्रतिष्ठानों का दासत्व ग्रहण करने की आवश्यकता रहती है, न लोगों का बलात धर्म परिवर्तन कराने की दरकार रहती है, न तलवार उठाने की जरूरत महसूस होती है, न विदेशी धन पर अपनी गतिविधियाँ चलाने की सोच पैदा होती है न दूसरे देशों को कब्जे में लेने की विस्तारवादी मानसिकता अपनाने की अपेक्षा रहती है और न ही चमत्कारों का आश्रय ग्रहण करने की उसे मजबूरी रहती है। इस मार्ग को अपनाने वाले जितने भी पंथ, सम्प्रदाय, मजहब हुए हैं उनका रक्तरंजित इतिहास स्वत: बोल रहा है कि धर्म के नाम पर कितना अत्याचार, अन्याय, आतंक, लूट-खसोट, बलात्कार होता रहा है जिससे मानवता शर्मशार होती रही है। धार्मिक शोषण ही नहीं बल्कि इससे व्यक्ति का आर्थिक, सामाजिक और मानसिक शोषण भी होता रहा है।

सामाजिक विषमता का तात्पर्य उन विषमताओं से है जो समाज को बांटती हैं, उनमें अभिजात्यता और अस्पृश्यता को जन्म देती हैं, उनमें से एक वर्ग को उच्चासन पर बैठाती है तो दूसरे वर्गों को समाज के आखिरी पायदान पर ला खड़ा करती हैं, अलग-अलग एक दूसरे से दूर बस्तियाँ बसाने की सोच या मजबूरी पैदा करती हैं, उन्हें निम्नतम कार्य अथवा पेशा अपनाने पर विवश करती हैं, उनसे बेगारी कराने के तेवर पैदा करती हैं। निम्न वर्ग को मन्दिर प्रवेश का अधिकार नहीं है, सार्वजनिक कुंओं से पानी भरने का अधिकार नहीं है, चारपाई पर बैठकर अथवा सरपंच प्रधान के सामने खड़े होकर, हाथ उठाकर, अंगुली नचाकर बात करने का अधिकार नहीं है इस प्रकार की दयनीय स्थिति सामाजिक विषमताओं की देन रही है जिससे वर्ग विशेष का, जाति विशेष का, मानसिक शोषण होता रहा है। निम्न वर्ग का दूल्हा घोड़े पर सवार नहीं हो सकता, तलवार धारण नहीं कर सकता, दुल्हन स्वर्ण आभूषण धारण नहीं कर सकती, शादी जमीन पर नहीं, जल में किश्ती पर ही हो सकती है इस तरह के प्रतिबन्ध सामाजिक विषमता के अन्यतम उदाहरण हैं आज़ादी मिलने पर कानूनन इन सभी प्रतिशोधों पर नियंत्रण स्थापित हो चुका है लेकिन मानसिकता में बदलाव आज भी नहीं आया है। हरिजन एक्ट बनाकर अथवा जातिगत आरक्षण पद्धति लागू करके दलित समुदाय को सुरक्षा कवच अवश्य ही प्रदान कर दिये गये हैं लेकिन इसके पार्श्ववर्त्ती परिणाम इन सुरक्षा कवचों का भी भेदन करने लगे हैं। इन कवचों का दुरुपयोग होने से उच्च वर्ग के नैसर्गिक अधिकार प्रभावित हो रहे हैं जिससे उस वर्ग में असंतोष और आक्रोश झलकना स्वाभाविक है। दलगत राजनीति के कारण भी यह सामाजिक विषमता पल्लवित हो रही है जिसे समस्या का दुर्भाग्यजनक पक्ष मानना होगा। जातिवाद को बनाये रखने के अनेक कारक-व्यवसाय, अलग बस्तियाँ, विवाह प्रथा, आर्थिक पराश्रय, ग्रामीण परिवेश, अभिजात्यता और अस्पृश्यता की मानसिकता, मालिक और नौकर की स्थिति आदि के रूप में आज भी कायम हैं जिनकी बदौलत सामाजिक विषमता का पोषण हो रहा है। इसमें धार्मिक संकीर्णता की भूमिका भी कहीं न कहीं बनी रहती है। सामाजिक विषमता शहरी समाज में अपने प्रखर रूप में न रही हो लेकिन ग्रामीण समाज में उसकी जड़ें आज भी गहरी हैं। अत: कोई ठोस और कारगर योजना बनाकर ही समस्या से निपटा जा सकता है। आर्य समाज, सिक्ख पंथ, ब्रह्मकुमारी, राधा स्वामी व निरंकारी समुदाय सरीखी अनेक संस्थाओं ने इस दिशा में मील पत्थर अवश्य स्थापित किये हैं। कुछ संतों ने, जो सम्प्रदाय गठन की ओर बढ़ रहे हैं, उन्होंने भी मानव धर्म की ओर अग्रसर होकर इस दिशा में बेहतर प्रदर्शन किया है। वास्तव में आज ऐसी जीवनशैली की जरूरत है जो अपने आपमें विशुद्ध रूप से धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक और मानवीय हो, विषमताओं को मिटाने वाली तथा मानसिक व आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाने वाली हो। कानून की भूमिका अपनी जगह सही हो सकती है लेकिन कानून आम आदमी की सोच व मानसिकता को नहीं बदल सकता अत: उसके लिये सामाजिक चेतना का शंखनाद होना जरूरी है जो अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। इसके बावजूद ग्रामीण क्षेत्र में काम करने की बहुत सी सम्भावनाएं मौजूद हैं। विगत शताब्दी में आर्य समाज ने जो काम ग्रामीण क्षेत्र में किया है, उसकी प्रशंसा होनी चाहिए भले ही यह काम अभी अधूरा ही क्यों न हो। गाँधी जी राजनीतिक क्षेत्र के मसीहा थे लेकिन उन्होंने उस राजनीति को अपंग, अधूरा व अशक्त माना था जो सामाजिक संवेदना से शून्य हो, सामाजिक संवाद से परहेज करती हो, सामाजिक संचेतना के दायित्व से पलायन करती हो। इसी कारण उन्होंने सामाजिक असमानता, अस्पृश्यता और जातिवाद पर जमकर प्रहार किये थे। मन्दिर प्रवेश और सार्वजनिक कुंओं से पानी भरने का अधिकार दलितों को दिलाने का उन्होंने आन्दोलन चलाया था। एक तरह में समाज सुधार का जो कार्यक्रम आर्य समाज ने अपनाया हुआ था उसका राजनीतिकरण गाँधी जी ने कर दिया था। अपने लोक-सम्पर्क अभियान को व्यापक बनाने के लिए ऐसा करना जरूरी भी था। इसका एक बड़ा कारण यह भी थाकि तब कांग्रेस में सर्वाधिक प्रतिशत आर्यसमाजियों का था। समाज में सौहार्द, सद्भावना और परोपकार की त्रिवेणी बहाकर ही इस शोषण से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

शेष अगले अंक में

thearyasamaj.org

पृष्ठ–1 का शेष

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी, संतोष यादव, मनीष ग्रोवर, बहन पूनम व प्रवेश आर्या ने 10 उन परिवारों को सम्मानित किया जिनके घर सिर्फ बेटियाँ ही हैं

बेटी बचाओ अभियान की 31 बहनों का भी किया गया अभिनन्दन

लोगों के सामने रखे तो सब हैरान हो गए। उन्होंने बताया कि देश में प्रतिदिन के हिसाब से 7 हजार बेटियां कम हो रही हैं। प्रतिमाह 2 लाख दस हजार लड़कियां कम हो रही हैं। वहीं प्रतिवर्ष 26 लाख 52 हजार लड़कियां कम हो रही हैं और यदि यही स्थिति रही तो आने वाले दस साल में लगभग ढाई करोड़ बेटियां कम होगीं। उस भयावह स्थिति का अहसास मात्र ही रोंगटे खड़े करने वाला है। स्वामी जी ने सभी से आह्वान किया कि आज संकल्प लेकर जाएं तथा अपने आपको बेटी बचाओ अभियान की एक मुख्य कड़ी मानकर, कन्या भ्रूण हत्या के इस कलंक को जब तक मिटा नहीं देंगे तब तक चैन से नहीं बैठेंगे।

जीत हमारी ही होगी। हां प्राथमिक सफलता को देखें तो यह कहना चाहूंगी कि जिस मुद्दे को लोग कुछ नहीं मानते थे उसको आज सरकारों ने अपने मुख्य एजेण्डे में शामिल किया है। यह कोई कम उपलब्धि नहीं है।

समाजसेवी बलराज कुण्डू ने कहा कि वह इस मुहिम में आपके साथ है। साथ ही उन्होंने जहां 21

चार बार हिमालय को फतेह करने वाली देश की आदर्श बेटी एवं पद्मश्री से सम्मानित संतोष यादव ने कहा कि आज लड़कियां किसी भी क्षेत्र में लड़कों से कम नहीं हैं बस एक पहल करके लड़कियों को पूर्ण अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि लड़कियां भी अपने अन्दर छिपी ताकत को पहचान करके उसका सदुपयोग करें तथा अपने देश व समाज का नाम रोशन करें। उन्होंने अपनी पर्वत की यात्रा तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेई जी से हुई चर्चा का भी वर्णन किया।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने कहा कि बेटी बचाओ अभियान का मुख्य उद्देश्य नारी के अस्तित्व को बचाने का है। नारियों को उनके आत्म सम्मान, स्वाभिमान, समानता के हक दिलवाने के लिए उनका संघर्ष जीवन के आखिरी श्वास तक जारी रहेगा। यदि कन्याओं को यूं ही मां के पेट में मारा जाता रहा तो एक दिन न सिर्फ नारी बल्कि मानव का अस्तित्व मिटने की नौबत भी आयेगी। इसलिए अभी से सावधान होने की आवश्यकता है।

रोहतक के विधायक श्री मनीष ग्रोवर ने कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का जो कार्यक्रम प्रारम्भ किया है वो सबके लिए अनुकरणीय है। उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाए जा रहे बेटी बचाओ अभियान की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की तथा कहा कि आर्य समाज हमेशा ही सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध लड़ता रहा है। हमेशा ही समाज के नव-निर्माण में आर्य समाज की भूमिका अहम होती है। रिटायर्ड (आई. ए. एस.) श्रीमती जयवन्ती श्योकन्द ने कहा कि यदि कन्या भ्रूण हत्याओं का सिलसिला यूं जी जारी रहा तो समाज का सन्तुलन बिगड़ जायेगा। फिर समाज में अपहरण एवं बलात्कार जैसी घटनाएं बढ़ेगी और एक भयावह स्थिति का सामना पूरे देश को करना पड़ेगा। इसलिए समय रहते यदि सचेत हो जाओगे तो ठीक है।

भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेशाध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा सुमन ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्रारम्भ किया गया बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ मिशन समाज के नव-निर्माण में एक जोरदार पहल है। जिसका सभी धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक संगठनों द्वारा स्वागत करना चाहिए। क्योंकि बेटी बचेगी तभी तो देश बचेगा। उन्होंने बहन प्रवेश आर्या व बहन पूनम आर्या की प्रशंसा करते हुए कहा कि ये दोनों बहनें हमारे लिए आदर्श हैं। जिन्होंने पूरा जीवन बेटियों को बचाने के लिए समर्पित कर दिया। साथ ही उन्होंने कहा कि महिला मोर्चा सदैव आपके मिशन में सहयोगी रहेगा।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि हम 2005 से इस अभियान को लेकर चल रहे हैं। कई बार मीडिया के लोग हमसे पूछते हैं कि बहन जी आपके अभियान के बाद क्या परिणाम निकले। मैं उन्हें एक ही बात कहती हूँ कि यह मनोवृत्तियों को बदलने का आन्दोलन है। मानसिकता एक मिनट में नहीं बदलती। वर्षों पुरानी जड़ताएं हैं। जिन्हें तोड़ने में समय लगेगा। मैं मानती हूं कि कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध हमारी लड़ाई लम्बी चलेगी लेकिन अन्त में

हजार रुपये बेटी बचाओ अभियान को भेंट किए वहीं महम से रोहतक तक की दो बसें केवल लड़कियों के लिए निःशुल्क चलाने का आश्वासन भी दिया जो कि अप्रैल में प्रारम्भ हो जायेंगी। इस अवसर पर शमसेर खरकड़ा, रामकरण हुड्डा, रमेश भाटिया, जगमती मलिक, शकुन्तला बेनीवाल, किरण आर्या, पूजा आर्या, डॉ. किरण कलकल, सुरेश राठी आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

जिले के सिविल सर्जन डॉ. शिव कुमार ने इस अवसर पर कन्या भ्रूण हत्या रोकने तथा बेटियों को पूर्ण सम्मान देने के लिए संकल्प दिलवाया। युवा भजनोपदेशक बहन कल्याणी आर्या ने कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध अपने गीत प्रस्तुत किए।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के

प्रधान स्वामी रामवेश, मनीष ग्रोवर (विधायक), संतोष यादव (पद्मश्री) बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, जयवन्ती श्योकन्द, प्रतिभा सुमन (प्रदेशाध्यक्ष), नरेन्द्र खट्टर आदि ने उन परिवारों को सम्मानित किया जिनके घर सिर्फ बेटियां हैं। बेटी बचाओ सम्मान से जिन परिवारों को सम्मानित किया गया। उन परिवारों में कर्नल आर. के. सिंह, श्री दलबीर आर्य मुकलान, शकुन्तला बेनीवाल (निदेशक खेल विभाग एम. डी. यू), डॉ. सुखदा व डॉ. अनिल कुमार अनिल कौशिक (पत्रकार) वैद्य धर्मपाल खाचरौली, संजय कुमार, पप्पू कुमार आदि मुख्य थे।

इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की 31 सक्रिय कार्यकर्ताओं को भी सम्मानित किया गया। जिनमें सुनीता खासा, जगमति मलिक, दयावती आर्या, कमला योगाचार्या, राजबाला आर्या, सुषमा आर्या, विकास आर्या, सोनिया आर्या, शशि आर्या, इन्दू आर्या, सुनीता आर्या, रीमा आर्या, सीमा आर्या, सुमन आर्या, पूजा आर्या, संगीता आर्या, राजकुमारी आर्या, मोनिका फरमाणा, मंजू निदाणा, राजपति आर्या, पूजा आर्या-महम, किरण ईस्माईला, मन्जू जुलाना, निशा-जीन्द, ज्योति-रोहतक, अनीता खरकड़ा, अनीता आर्या-जीन्द, संतोष आर्या, एकता आर्या, श्वेता आर्या, पूनम आर्या, कीर्ति आर्या आदि मुख्य थी।

इस कार्यक्रम की मुख्य संयोजक कुशल संगठनकर्ता बहन प्रवेश आर्या रही। कार्यक्रम की सफलता में आचार्य सन्तराम, सज्जन राठी, मा. प्रदीप कुमार, डॉ. सोनू, अजय आर्य, डॉ. विवेकानन्द शास्त्री, डॉ. श्यामदेव, पंकज आर्य, सोनू आर्य-ढोभी, सुधीर फौगाट, विजय आर्य-भाजपा नेता, डॉ. दिनेश, आचार्य सत्यव्रत, डॉ. राजपाल आर्य, धर्मवीर सरपंच, अशोक आर्य-खटकड़, कर्मपाल आर्य, सोनू आर्य, मा. अजीत, राजबीर सिंह, मनीष व पंजाब सिंह-चांदपुर, सूरजमल पहलवान, डॉ. राजेश आर्य, नफेसिंह, जयपाल आर्य, जगबीर आर्य, डॉ. सुखबीर शास्त्री, डॉ. स्वतन्त्रानन्द, इंस्पैक्टर अर्जुन सिंह, मा. जयवीर आर्य, श्याम सिंह आर्य, महेन्द्र सिंह आर्य, नितिन आर्य, महावीर, राजबीर वशिष्ठ, वीरेन्द्र शास्त्री, कृष्ण प्रजापति, जिलेसिंह कुण्डू, जिले सिंह आर्य, आशीष कुमार, आनन्द आर्य, निशान्त आर्य, पं. नरेश , ईश्वर चन्द्र शास्त्री, राजबीर आर्य, गायत्री आर्या आदि का विशेष सहयोग रहा।

14 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी, 2015 तक पलवल से चण्डीगढ़ तक की यात्रा की रूपरेखा बताने के साथ ही कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गई।

आकर्षक स्लोगनों, गतिविधियों के मनमोहक व रोमांचित करने वाले बड़े-बड़े फ्लैक्स एवं ओ३म् के झण्डे व झण्डियों से सुसज्जित इंवीटेशन गार्डन सबके दिल व दिमाग पर एक अमिट छाप छोड़ गया। कार्यक्रम बेहद सफलता व हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ।

युवा चरित्र निर्माण एवं बॉक्सिंग प्रशिक्षण शिविर चांदपुर में सम्पन्न

युवाओं के निर्माण से ही होता है राष्ट्र का निर्माण

– स्वामी आर्यवेश

आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जीन्द के तत्वावधान एवं मा. अशोक आर्य के संयोजन में युवा चरित्र निर्माण एवं बॉक्सिंग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 16 दिसम्बर से 23 दिसम्बर, 2014 तक जिले के गांव चान्दपुर में किया गया। जिसमें शिविर के समापन अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के अध्यक्ष स्वामी आर्यवेश जी पहुंचे। स्वामी जी ने अपने मुख्य उद्बोधन में कहा कि युवाओं के निर्माण से ही राष्ट्र का निर्माण होता है। इसलिए आवश्यकता है युवाओं को सही दिशा में आगे बढ़ाने की। आज हम सभी का यह दायित्व बनता है कि युवा वर्ग को नशे जैसी कुरीतियों से दूर रखने तथा उनको क्रांतिकारियों एवं सतपुरुषों को जीवन से प्रेरणा लेने की सीख देने की आवश्यकता है। युवाओं को जहां मानसिक रूप से मजबूत करने की आवश्यकता है वहीं शारीरिक रूप से भी सक्षम होने की आवश्यकता है। जिसे आर्य युवक परिषद् के इन शिविरों में हासिल किया जा सकता है।

इस अवसर पर स्वामी जी के साथ आचार्य सन्तराम, बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या, राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या, लोकशक्ति मंच के प्रधान धर्मवीर सरपंच ब्र. दीक्षेन्द्र, अजय आर्य, यादराम शास्त्री, अशोक आर्य, कप्तान सिंह आर्य, पंजाब सिंह, मनीष आर्य आदि भी उपस्थित थे। इस पूरे शिविर में प्रशिक्षण का दायित्व पंकज आर्य (बॉक्सिंग प्रशिक्षक) सोनू आर्य (योग प्रशिक्षक) ने संभाला जबकि पूर्ण व्यवस्था कप्तान आर्य ने संभाली। इस अवसर पर आर्य युवक परिषद् चान्दपुर का भी गठन किया गया। जिसमें मनीष कुमार को प्रधान तथा कप्तान सिंह को संरक्षक बनाया गया।

– अशोक आर्य, संयोजक

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का वक्तव्य

14 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी, 2015 तक पाखण्ड, नशाखोरी एवं कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध पूरे हरियाणा में जन-जागरण यात्रा निकाली जायेगी

एक लाख युवाओं से संकल्प पत्र भरवाकर महामहिम राष्ट्रपति जी को सौंपे जायेंगे

हिसार : 21 दिसम्बर, 2014

आज यहां आर्य समाज मुकलान (हिसार) के वार्षिकोत्सव में भाग लेने के लिए पधारे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने प्रेस वक्तव्य के द्वारा आह्वान किया कि हरियाणा के माथे से शराब, कन्या भ्रूण हत्या एवं पाखण्ड के कलंक को मिटाने के लिए आर्य समाज को संगठित होकर संघर्ष करना होगा। स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या आज समाज की सर्वाधिक ज्वलन्त समस्या बनी हुई है। लड़कियों की लड़कों से कम होती संख्या बेहद चिन्ताजनक है। कन्याओं को मां के पेट में मरवा देना ईश्वरीय नियम का उल्लंघन है। कन्या भ्रूण हत्या एक जघन्य पाप एवं कानूनी अपराध है। आर्य समाज ने निर्णय किया है कि इस बुराई के खिलाफ प्रचण्ड जन-चेतना अभियान चलाया जायेगा। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि युवाओं में बढ़ती नशाखोरी समाज के लिए बड़ी चुनौती है और भविष्य में खतरनाक परिणाम देने वाली समस्या है। इसी तरह धर्म के नाम पर चल रहे अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं पापाचार को मिटाना भी समय की प्रबल आवश्यकता है।

स्वामी आर्यवेश जी ने सरकार से मांग की कि :-

हरियाणा में शराब तथा अन्य मादक द्रव्यों की बढ़ती हुई प्रवृत्ति पर रोक लगाने के लिए सरकार आर्य समाज तथा अन्य सामाजिक संगठनों के सहयोग से विशेष कदम उठाये।

प्रदेश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने का लक्ष्य बनाकर सरकार चरणबद्ध कदम उठाए तथा पहले चरण में गांवों के और उसके बाद शहरों के ठेके बन्द किए जायें।

आर्य समाज केन्द्र सरकार से मांग करता है कि शराब के सम्बन्ध में राष्ट्रीय नीति घोषित की जाए तथा पूरे देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू की जाए।

कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लगाने के लिए हरियाणा सरकार केन्द्र सरकार को भारतीय दण्ड संहिता में संशोधन करने की सिफारिश करे तथा कन्या भ्रूण की हत्या को भारतीय दण्ड संहिता की धारा-302 के अन्तर्गत हत्या माना जाए।

जिस परिवार में लड़की जन्म ले उस लड़की के नाम बैंक में खाता खोलकर एक लाख रुपये की सहयोग राशि जमा कराई जाए।

जिन परिवारों में केवल लड़कियां ही हों उन्हें नौकरियों में प्राथमिकता दी जाये।

धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड एवं अन्धविश्वास को मिटाने के लिए समस्त डेरों व मठों की सघन जांच की जाये व उसमें अवैध हथियारों एवं अनैतिक गतिविधियों पर नियमित नजर रखी जाए।

आर्य समाज सरकार के स्वच्छ भारत मिशन, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रम एवं कन्या भ्रूण हत्या विरोधी तथा अन्धविश्वास को मिटाने में अपने हजारों कार्यकर्ताओं को पूरी निष्ठा के साथ लगायेगा तथा पूरा सहयोग करेगा।

स्वामी जी ने समस्त ग्राम पंचायतों से अपील की है कि वे अपने गांव में शराब का ठेका न खोलने का प्रस्ताव पास करके जिला उपायुक्त एवं आबकारी उपायुक्त (हरियाणा) को भेंजें। स्वामी जी ने अपनी सभा की ओर से चलाये जाने वाले भावी कार्यक्रमों की भी घोषणा की।

कार्यक्रमों की घोषणा

14 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी, 2015 तक पूरे हरियाणा के सभी जिलों से होकर नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या तथा पाखण्ड

के विरुद्ध जन-जागरण यात्रा निकाली जायेगी।

बेटी बचाओ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ, 7 से 15 मार्च, 2015 तक स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली (रोहतक) में होगा।

एक लाख युवाओं (लड़के व लड़कियों) से नैतिकता, ईमानदारी, देशभक्ति व आध्यात्मिकता को अपनाने तथा नशोखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, अश्लीलता व उच्छृंखलता जैसी बुराईयों से दूर रहने हेतु संकल्प पत्र भरवाकर राष्ट्रपति जी को सौंपा जायेगा।

सभी जिलों में नशाबन्दी समितियों, बेटी बचाओ अभियान समितियों तथा युवा निर्माण अभियान की समितियों का गठन किया जायेगा।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर मुख्य रूप से सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के प्रान्तीय प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, परिषद् के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आचार्य सन्तराम, प्रान्तीय प्रेस प्रवक्ता सत्यपाल अग्रवाल, सत्य प्रकाश आर्य, अजयपाल आर्य आदि भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर भारत के सुप्रसिद्ध आर्य नेता स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा व प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्। स्वामी सर्वदानन्द जी संस्थापक गुरुकुल धीरणवास, स्वामी सुमेधानन्द जी संसद सदस्य-सीकर, प्रसिद्ध भजनोपदेशक पं. रामनिवास, बहन पूनम आर्या संयोजक बेटी बचाओ अभियान, बहन प्रवेश आर्या प्रधान बेटी बचाओ अभियान, ब्र. दीक्षेन्द्र जी प्रधान सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा, सहदेव बेधड़क (भजनोपदेशक), संगीता आर्या सहारनपुर, कल्पाणी आर्या (आर्यनगर), चौ. हरिसिंह सैनी, मन्त्री हरियाणा सरकार, धर्मवीर गोयत, उमेश आर्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार, जगदीश सिंवर, सिरसा, सुभाष आर्य प्रधान आर्य समाज राखीखास, दयानन्द घिराये, आर्य युवक परिषद् हिसार के प्रधान देवेन्द्र सैनी, श्याम आर्य, महेन्द्र सिंह आर्य, पवन आर्य, राखी खास ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन पूनम आर्या ने अपने भावपूर्ण उद्बोधन में समाज में हो रहे महिलाओं पर अत्याचार तथा अपमान की चर्चा करते हुए कहा कि महिलाओं को अपने सम्मान की रक्षा के लिए स्वयं खड़ा होना पड़ेगा और इतनी योग्यता पैदा करनी होगी कि वे पुरुषों से कदम मिलाते हुए चल सके। कहने को तो यह पुरुष समाज महिलाओं से सम्बन्धित कई पर्वों में कन्याओं और महिलाओं को सम्मान प्रदान करते हैं लेकिन व्यवहार में उनके दृष्टिकोण में आज भी कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया है। उन्होंने महिलाओं को स्वरक्षा के उपाय करने का भी सुझाव दिया। इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की प्रधाना बहन प्रवेश आर्या ने महिलाओं को शिक्षित करने और उन्हें आर्य समाज की मुख्यधारा से जोड़ने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा कि हमें अपने परिवार की बेटियों और महिलाओं को आर्य समाज में होने वाले कार्यक्रमों में भेजना चाहिए और महिला सत्संग और अन्य कार्यक्रमों के माध्यम से आस-पास की महिलाओं को जोड़कर उन्हें सामाजिक गतिविधियों तथा समाज में उनके महत्त्व पर जानकारी देनी चाहिए। उन्होंने कहा कि यदि हम एक महिला को आर्य बनाते हैं तो इसका मतलब है कि हमने एक परिवार को आर्य बनाया। आज समय आ गया है कि महिलायें अपनी ताकत का प्रदर्शन करें। अन्त में आर्य समाज के प्रधान चौ. बदलूराम जी ने आये हुए सभी जनों का स्वागत किया व धन्यवाद किया।

आर्य समाज, सैक्टर-19, फरीदाबाद में अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल शहीदी समारोह सम्पन्न

राम प्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा का स्वामी आर्यवेश जी ने किया विमोचन

आर्य समाज, सैक्टश्र-19, फरीदाबाद के तत्वावधान में 19 दिसम्बर, 2014 को अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां, राजेन्द्र लाहिणी एवं ठाकुर रोशन सिंह बलिदान दिवस के अवसर पर एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें अनेक विद्वानों ने शहीदों के संस्मरण सुनाकर श्रोताओं के रोंगटे खड़े कर दिये। इस अवसर पर पं. रामप्रसाद बिस्मिल द्वारा फांसी से तीन दिन पूर्व गोरखपुर की जेल में लिखी गई आत्मकथा का पुनर्प्रकाशन करवाकर आर्य समाज सैक्टर-19, फरीदाबाद की ओर से उसका विमोचन भी करवाया गया। पुस्तक का विमोचन स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डॉ. अनिल आर्य जी, आर्य समाज के संरक्षक लक्ष्मीचन्द आर्य जी, आर्य केन्द्रीय सभा की प्रधाना श्रीमती विमला ग्रोवर, आर्य समाज के प्रधान महेश चन्द्र आर्य, मंत्री श्री गजराज सिंह आदि ने किया। कार्यक्रम में अपने ओजस्वी व्याख्यान में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्रोताओं के रोंगटे खड़े कर दिये। उन्होंने रामप्रसाद बिस्मिल की अनेकों घटनाएं सुनाकर युवाओं के लिए उसे अत्यन्त प्रेरणादायक बताया। स्वामी जी ने कहा कि बिस्मिल ने स्वामी सोमदेव जी की प्रेरणा से सत्यार्थ प्रकाश पढ़ना शुरू किया था तथा नियमित आर्य समाज शाहजहांपुर में जाने से उनका पूरा जीवन बदल गया। पहले वे सिगरेट, शराब, जुआ सहित अनेकों दुर्व्यसनों तथा बुरी संगत में पड़े हुए थे किन्तु सत्यार्थ प्रकाश ने उनके जीवन में क्रांतिकारी मोड़ पैदा किया और वे महान क्रांतिकारी बने। उनका जीवन अत्यन्त सात्विक, तपस्वी तथा संघर्ष से ओत-प्रोत रहा। ऐसे बलिदानी युवाओं के बलबूते पर ही किसी समाज एवं राष्ट्र की उन्नति सम्भव होती है। पं. रामप्रसाद बिस्मिल के साथ ही उनके अभिन्न मित्र अशफाक उल्ला खां ने एक मुसलमान होते हुए भी बिस्मिल का अन्तिम समय तक साथ निभाया और फांसी के फन्दे को चूम लिया। अशफाक उल्ला खां तथा राम प्रसाद बिस्मिल इतने घनिष्ठ मित्र थे कि उनका परस्पर व्यवहार सगे भाईयों जैसा था। वे आर्य समाज मंदिर में जाते तो इकट्ठे जाते, खाना खाते तो इकट्ठा खाते और आन्दोलन में भी निरन्तर दोनों साथ ही रहे। वे दोनों अपने-अपने तरीके से ईश्वरोपासना करते थे। बिस्मिल संध्या हवन करते थे और अशफाक उल्ला खां नमाज पढ़ते थे। अपने अन्तिम समय में राम प्रसाद बिस्मिल ने देश के युवाओं को जो संदेश दिया वह आज के युवा वर्ग चाहे वह किसी भी पंथ समुदाय से जुड़े हों प्रेरणा दायक है। उन्होंने कहा कि जैसे मैं एक पक्का आर्य समाजी था और अशफाक एक पक्का मुसलमान होते हुए भी देश के लिए इक्ट्ठे कार्य कर सकते हैं तो आज के युवा क्यों नहीं कर सकते।

आर्य समाज के पदाधिकारियों को स्वामी आर्यवेश जी ने बिस्मिल की आत्मकथा प्रकाशित करने के लिए साधुवाद दिया तथा आर्य समाज की गतिविधियों की भी प्रशस्ति की। इस अवसर पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में शहीद हुए राम प्रसाद बिस्मिल तथा उनके साथियों के प्रति उद्गार व्यक्त किये। उन्होंने युवाओं से बिस्मिल जैसी दिनचर्या बनाने की अपील की। उन्होंने सभी आर्य समाजों का आह्वान किया कि वे भी राम प्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा प्रकाशित कराकर युवाओं में बांटें। जिससे इस पुस्तक को पढ़कर वे अपने जीवन को देशसेवा में लगाने के लिए उत्साहित हो सकें।

इस अवसर पर केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने देश की वर्तमान परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए एक बार फिर से देश में साम्प्रदायिक ताकतों के विरुद्ध खड़ा होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जिन मूल्यों एवं सिद्धान्तों के लिए रामप्रसाद बिस्मिल तथा उनके साथियों ने बलिदान दिया था आज उनकी सरेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। अपने शहीदों को स्मरण करके अपनी भारतीय संस्कृति एवं आर्य सिद्धान्तों की सुरक्षा के लिए हमें कृत संकल्प होना चाहिए। आर्य समाज के संरक्षक श्री लक्ष्मीचन्द आर्य ने स्वामी आर्यवेश जी को सुझाव दिया कि वे सार्वदेशिक सभा की ओर से अधिक से अधिक उत्तम साहित्य प्रकाशित करके लोगों को दें जिससे लोग अच्छे रास्ते पर चल सकें। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री गजराज सिंह आर्य ने किया।

thearyasamaj.org

आर्य केन्द्रीय सभा, गाजियाबाद के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह एवं शोभायात्रा का भव्य आयोजन

स्वामी श्रद्धानन्द जी को भारत रत्न सम्मान से विभूषित किया जाये

– स्वामी आर्यवेश

स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान से प्रेरणा लें युवा पीढ़ी

– पं. माया प्रकाश त्यागी

स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन यज्ञमय था

– स्वामी चन्द्रवेश

28 दिसम्बर, 2014 को आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के तत्वावधान में स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान दिवस के अवसर पर एक भव्य शोभायात्रा एवं बलिदान समारोह का आयोजन रामलीला मैदान, गाजियाबाद में किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ विशेष यज्ञ के द्वारा हुआ। शम्भू दयाल आर्य संन्यास आश्रम, गाजियाबाद में नगर के सभी आर्य समाजों के हजारों आर्यजनों की उपस्थिति में आश्रम के अध्यक्ष स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में विशेष यज्ञ किया गया। यहीं से हजारों व्यक्तियों के साथ शोभा यात्रा का प्रारम्भ हुआ। यह शोभा यात्रा नगर के विभिन्न बाजारों से होते हुए रामलीला मैदान में जाकर सभा में परिवर्तित हो गई। यज्ञ के अवसर पर वेद, दर्शन एवं व्याकरण के उद्भट विद्वान पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज ने अपने प्रवचन में स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का जीवन यज्ञमय था। उन्होंने अपने जीवन में देश की आजादी एवं समाज की उन्नति के लिए बड़े से बड़ा दायित्व निभाया और अन्त में उनका बलिदान हो गया।

रामलीला मैदान में आयोजित समारोह को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को स्वतन्त्रता आन्दोलन का महान पुरोधा एवं राष्ट्र नायक बताया। उन्होंने कहा कि जलियावाला बाग के भीषण हत्याकाण्ड के पश्चात् देश में व्याप्त भय एवं आतंक के काले बादलों को चीरने का काम स्वामी श्रद्धानन्द जी ने किया। पंजाब में देश के लाखों देशभक्त लोगों को एकत्रित करके कांग्रेस के अधिवेशन के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाकर स्वामी जी ने अदम्य साहस का परिचय दिया था। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की स्थापना शुद्धि आन्दोलन एवं अछूतोद्धार का राष्ट्रीय कार्यक्रम तथा साम्प्रदायिकता के विरुद्ध देश के लोगों को एकजुट करने का ऐतिहासिक कार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन की मुख्य उपलब्धियाँ रही हैं। उन्होंने आर्थिक विपन्नता से दक्षिण अफ्रीका में जूझ रहे महात्मा गांधी को अपने गुरुकुल के विद्यार्थियों का दूध बन्द करके उसके बदले 1500 रुपये की राशि महात्मा गांधी को भेजकर त्याग एवं उदारता का ऐसा उदाहरण प्रस्तुत किया जिसे महात्मा गांधी आजीवन नहीं भुला सके। गुरुकुल कांगड़ी में बम बनते हैं। इस शिकायत एवं सूचना के आधार पर इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री रैम्जे मैक्डॉनाल्ड द्वारा गुरुकुल का दौरा करने पर स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को उपस्थित कर उन्हें बम की संज्ञा देकर आश्चर्य में डाल दिया था और लन्दन वापस जाने के बाद रैम्जे मैक्डॉनाल्ड ने इंग्लैण्ड के अखबारों में अपने वक्तव्य के द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी को एक महान व्यक्तित्व की संज्ञा दी थी। स्वामी जी ने भारत के प्रधानमंत्री श्री मोदी जी से स्वामी श्रद्धानन्द तथा शेरे पंजाब लाला लाजपत राय को भारत रत्न के सम्मान से विभूषित करने की मांग की। उन्होंने कहा कि इन्हें भारत रत्न से विभूषित करके उनकी सेवाओं, त्याग एवं बलिदान के लिए देश कृतज्ञता व्यक्त कर सकता है।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान से युवा वर्ग को प्रेरणा प्राप्त करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी महान त्यागी, तपस्वी, बलिदानी संन्यासी थे। उन्होंने समाज एवं राष्ट्र के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। एक उच्चकोटि के विख्यात वकील होने के बावजूद उन्होंने देशसेवा के लिए संन्यासी बनना स्वीकार किया। यह आज के युवाओं के लिए बेहद प्रेरणा देने वाली घटना है। कार्यक्रम में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री ज्ञानेन्द्र आर्य, श्री आनन्द प्रकाश आर्य-हापुड़, श्री नरेन्द्र आर्य-पूर्व प्रधान, जिला सभा के पूर्व प्रधान श्री जयपाल त्यागी, स्वामी सत्यवेश जी, श्री महेन्द्र सिंघल, श्री प्रवीण आर्य, श्री सुरेश आर्य, श्री प्रमोद चौधरी, श्री सतयवीर चौधरी आदि भी उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान श्री सुशील गर्ग ने की तथा मंच संचालन सभा के मंत्री श्री वीरसेन जी ने किया।

पं. चन्द्रभानु आर्य को दी गई भावभीनी श्रद्धांजलि

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी भी पहुंचे श्रद्धांजलि देने हेतु

आर्यसमाज के दिग्गज भजनोपदेशक और साहित्यकार, शांतिधर्मी के प्रकाशक और प्रधान सम्पादक पं0 चन्द्रभानु आर्य का गत 23 दिसम्बर 2014 (पौष शुक्ला द्वितीया) को रात्रि 11:35 पर देहावसान हो गया। वे 85 वर्ष के थे। 24 दिसम्बर को अंत्येष्टि संस्कार पं0 ईश्वर चन्द्र शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया, जिसमें नगर व आसपास के हजारों लोगों ने उन्हें अन्तिम विदाई दी। उनके सम्मान में स्वर्णकार बाजार बन्द रहा।

पं0 चन्द्रभानु आर्य का जन्म पौष शुक्ला द्वितीया को ही सन 1930 में जिला पानीपत के गांव लोहारी में पिता श्री हरज्ञान सिंह व माता श्रीमती मानकौर के यहाँ आर्यसमाजी स्वर्णकार परिवार में हुआ था। 4 वर्ष ग्राम कालखा में संस्कृत पाठशाला में अध्ययन कर के 1948 में गुरुकुल घरौंडा में प्रवेश ले लिया। उन्होंने स्वामी भीष्म जी व स्वामी रामेश्वरानन्द जी से शिक्षा ग्रहण कर 21 जनवरी 1951 से आर्यसमाज के भजनोपदेशक के रूप में कार्य प्रारम्भ कर दिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (संयुक्त) की सेवा में रहते हुए 1957 में हिन्दी आन्दोलन का प्रचार और धन संग्रह किया तथा 2 मास तक हिसार जेल में रहे। आपने सार्वदेशिक सभा के अन्तर्गत दिल्ली वेद प्रचार मण्डल, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, आर्यसमाज हिसार, आर्यसमाज पानीपत, आर्यसमाज जींद, आर्यसमाज हांसी, वेद प्रचार मण्डल जींद आदि के माध्यम से लगभग 64 वर्ष प्रचार किया। उनका प्रचार क्षेत्र लगभग समस्त हिन्दी भाषी भारत रहा। वे प्रचारार्थ दो बार नेपाल भी गए। अपने जीवन में सैंकड़ों आर्यसमाजों की स्थापना कर उनका सबंध सभा से स्थापित किया। आप जींद में स्वामी रत्नदेव जी द्वारा स्थापित स्वामी भीष्म भजनोपदेशक महाविद्यालय के दो वर्ष तक प्राचार्य रहे। आर्ष गुरुकुल कालवा, सिंहपुरा, जुलाना, खरल, कुम्भाखेड़ा, आर्यनगर आदि नवस्थापित और पूर्वस्थापित गुरुकुल कुरुक्षेत्र, मटिण्डु, घरौंडा, गदपुरी, इन्द्रप्रस्थ आदि प्राय: सभी गुरुकुलों के लिए समय समय पर अन्न-धन आदि का संग्रह किया। हरियाणा में आर्यसमाज के इस पीढ़ी के भजनोपदेशकों में चन्द्रभानु आर्य जी ने सर्वाधिक लेखन कार्य किया। उन्होंने लगभग 40 भजन ऐतिहासिक और 5 हजार से अधिक अन्य फुटकर भजनों की रचना की। आर्यसमाज के इतिहास में संभवत: पहली बार किसी भजनोपदेशक की रचना को हरियाणा साहित्य अकादमी ने प्रकाशनानुदान प्रदान किया। उनके जीवन काल में कुल 12 भजनों की पुस्तकें प्रकाशित हुईं। उन्होंने 5 पुस्तकों का सम्पादन भी किया। फरवरी 1999

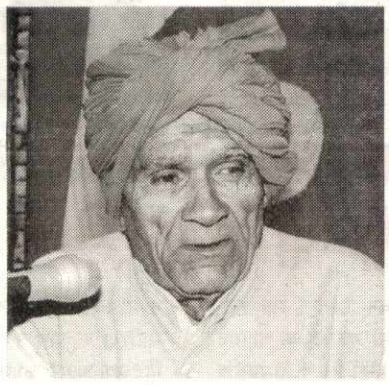

से वे यशस्वी मासिक पत्र शांतिधर्मी का प्रकाशन व सम्पादन कर रहे थे। उनके द्वारा लिखित शांति प्रवाह पाठकों को विशेष प्रेरणा देने वाला था। उन्होंने अपने जीवन काल में दर्जनों भजनोपदेशक तैयार किये जिनमें लगभग 12 शिष्य अब भी देश भर में सफल प्रचारक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन मथुरा में उन्हें 'संगीत भास्कर' सम्मान से सम्मानित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2012 में भी उन्हें उनकी सेवाओं के लिए सम्मानित किया गया था। आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश द्वारा 'आर्य-सेवक' के शताब्दी समारोह में 'सम्पादक श्री' सम्मान दिया गया। हिन्दी साहित्य सम्मेलन गाजियाबाद द्वारा प्रशस्ति पत्र व 'आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी सम्मान' से भी वे अलंकृत हुए। वे अपने पीछे पुत्र, पौत्रों और प्रपौत्र सहित भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

4 जनवरी 2014 को उनके प्रति श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया। मौसम की प्रतिकूलता के बावजूद सैंकड़ों गणमान्य व्यक्तियों ने उनके महनीय व्यक्तित्व को याद किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी रामवेश जी, स्वामी धर्मदेव जी, कालवा, आचार्या डॉ0 दर्शना, खरल, ब्र0 दीक्षेन्द्र जी, अध्यक्ष आर्य युवक परिषद् हरियाणा, आर्य सन्तराम, जिला वेद प्रचार मण्डल के प्रधान मा0 रायसिंह आर्य, रामकुमार आर्य वेद प्रचार मण्डल हिसार, इण्डस शिक्षण संस्थाओं के निदेशक सुभाष श्योराण, प्रो0 ओमकुमार आर्य, पं0 रामरख भिवानी, पं0 रामेश्वरदत्त, पं0 रामकुमार बाघड़ू, नगरस्थ सभी आर्यसमाजों, हिन्दी साहित्य प्रेरक संस्था, स्वामी भीष्म वेद प्रचार मण्डल, घरौंडा, विश्वकर्मा सभा नारनौंद, मैढ सुनार सभा, स्त्री आर्यसमाज, आर्यसमाज नरवाना, सफीदों, बुडायन, कापड़ो, खटकड़, जुलानी, अहिरका, गुसांईखेड़ा, जुलाना, उचाना आदि व बीकानेर, रोहतक, आट्टा, काबड़ी, हिसार, उकलाना, माजरा, मतलौढा, लोहारी आदि से पधारे गणमान्य व्यक्तियों ने उन्हें श्रद्धांजली दी, दूरभाष और ईमेल के माध्यम से देश-विदेश से श्रद्धांजली संदेश प्राप्त हुए। स्वर्णकार सभा के प्रधान फूलसिंह वर्मा, डॉ0 राममेहर वर्मा आदि ने भी उनके निधन पर गहन संवेदना व्यक्त की। पं0 जी के सुपुत्रों रमेश चन्द्र आर्य, सहदेव शास्त्री व रवीन्द्रकुमार आर्य ने सभी गणमान्य व्यक्तियों का आभार व्यक्त किया।

सहदेव शास्त्री, सुपुत्र (94162 53826)

आचार्य विश्वमित्र शास्त्री की पुण्यतिथि के अवसर पर ब्रह्ममहाविद्यालय हिसार में यज्ञ एवं सभा का आयोजन

दयानन्द ब्रह्ममहाविद्यालय हिसार के पूर्व आचार्य एवं नागोरी गेट हिसार के सुयोग्य धर्माचार्य स्व. आचार्य विश्वमित्र शास्त्री की पुण्यतिथि के अवसर पर 26 दिसम्बर, 2014 को दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय हिसार में यज्ञ एवं स्मृति सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता वीतराग आर्य संन्यासी स्वामी सर्वदानन्द महाराज ने की। प्रात:काल ब्रह्म महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रमोद जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसमें आचार्य जी की सुयोग्य सुपुत्री पल्लवी अपने पति के साथ यजमान के रूप में प्रतिष्ठित हुई। साथ ही आचार्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती शशि आर्या तथा अन्य पारिवारिक जन भी यज्ञ में सम्मिलित हुए। यज्ञ के उपरान्त स्मृति सभा को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आचार्य विश्वमित्र जी को आर्य जगत का एक ऐसा सहृदय विद्वान् व्यक्ति बताया जिन्होंने कितने ही युवाओं को आर्य समाज के कार्य में जीवन लगाने के लिए तैयार किया। स्वामी जी ने बताया कि मैंने स्वयं अपने जीवन में वेद कथा एवं वेद प्रवचनों का प्रारम्भ आचार्य विश्वमित्र जी की ही प्रेरणा से किया हुआ था। उन्होंने ही सर्वप्रथम आठ दिन की वेदकथा हिसार में करने के लिए मुझे आमंत्रित किया था जिससे मुझे वेद प्रचार में एक नई दिशा प्राप्त हुई। आचार्य जी सदैव अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए मेरे लिए कहा करते थे कि आप एकदिन निश्चित रूप से सार्वदेशिक सभा के प्रधान बनेंगे। आज उनकी बात मूर्तरूप है और यह गुरुतर दायित्व आर्यों ने मुझे प्रदान किया है। इस अवसर पर श्री अतर सिंह क्रांतिकारी, श्री रामकुमार प्रधान वेद प्रचार मण्डल हिसार, आचार्य प्रमोद कुमार, स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री ईश कुमार प्रान्तीय प्रभारी स्वाभिमान ट्रस्ट, श्री राम सुफल शास्त्री-हांसी, श्री दलबीर सिंह आर्य-मुकलान, श्री देवेन्द्र सैनी-मन्त्री आर्य समाज हिसार, श्री ताराचन्द आर्य, श्री सत्यपाल अग्रवाल, श्री बजरंग लाल गोयल-कोषाध्यक्ष आर्य समाज हिसार, श्री सत्यपाल आर्य-मंत्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आचार्य संतराम आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य-प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, आचार्य रामस्वरूप-गुरुकुल आर्यनगर आदि ने भी अपने विचार रखे।

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य समाज रामनगर गुड़गांव द्वारा विशाल 7 दिवसीय आध्यात्मिक दिव्य सत्संग सम्पन्न

आर्य समाज रामनगर गुड़गांव (हरियाणा) द्वारा विशाल 7 दिवसीय आध्यात्मिक दिव्य सत्संग के अतन्तर्गत यज्ञ भजन प्रवचन का कार्यक्रम विभिन्न स्थानों पर आयोजित किया गया जिसमें आर्य जगत के युवा विद्वान आचार्य गवेन्द्र जी के द्वारा यज्ञ प्रवचन हुए उन्होंने कहा वेद दुनिया की सबसे प्राचीन पुस्तक है। वेदों में हमारी संस्कृति, धर्म, भक्ति, प्रार्थना, ध्यान ज्ञान कर्म उपासना छिपा पड़ा है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है। स्वत: प्रमाण है। अत: वेद का क्षेत्र अनन्त है वेद का सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान मानव जाति के लिए प्रेरणाप्रद महान जीवन सन्देश है मनुष्य को प्रभु ने वेदों का ज्ञान इसलिए दिया जिससे वह जान सके कि उसका जन्म दुनिया में क्यों हुआ। तुम्हारा क्या कर्त्तव्य है तुम कौन हो, तुम्हें क्या करना चाहिए क्या नहीं करना चाहिए संसार क्या है? तुम्हारी राह क्या है? इस अवसर पर योगेश दत्त जी एवं सतीश सत्यम जी के भजन हुए। समापन समारोह पर गुड़गांव आर्य समाज रामनगर के प्रधान जी व अन्य आर्य सभासदों व स्थानीय विधायक उमेश अग्रवाल जी ने विद्वान, वक्ता आचार्य गवेन्द्र जी तथा सतीश सत्यम को सम्मानित किया।

यजुर्वेद व सामवेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा (रजि.) के तत्वावधान में 16 दिसम्बर से 21 दिसम्बर तक पलवल (हरियाणा) में यजुर्वेद व सामवेद पारायण महायज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। वैदिक विद्वान आचार्य चन्द्रदेव जी ने यज्ञ ब्रह्मा की भूमिका निभाई श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल गौतम (देवालय) जिला अलीगढ़ के विद्यार्थियों ने सस्वर वेदपाठ किया। यज्ञ के माध्यम से पाखण्डवाद, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी आदि बुराईयों के खिलाफ जन जागरण किया गया। पूर्णाहुति के पावन अवसर पर ''आध्यात्मिक चिन्तन सम्मेलन'' का आयोजन किया। इस अवसर पर वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा के प्रवक्ता व गुरुकुल गोमत के आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती ने कहा यज्ञ की समस्त क्रियायें हमें यह संकेत करती हैं कि अपने जीवन के व्यवहार व विचारों में त्याग भावनाओं को जगाओ अपने स्वार्थ की पूर्ति हेतु दूसरों के पदार्थों का प्रयोग मत करो बल्कि दूसरों की भलाई के लिए अपने पदार्थों का त्याग वृत्ति कर दो क्योंकि लेने की वृत्ति स्वार्थ वृत्ति है और देने की प्रवृत्ति है। इस अवसर पर 21 कुण्डीय यज्ञ व ऋषि लंगर का भी आयोजन किया गया।

- डॉ. धर्म प्रकाश आर्य

गुरुकुल गोमत (खैर) अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव

आर्य जगत के तपोनिष्ठ संन्यासी व गुरुकुलीय आन्दोलन के पुरोधा स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के पावन सान्निध्य में श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल गोमत (देवालय) अलीगढ़ का वार्षिकोत्सव, 13 से 15 मार्च, 2015 को धूमधाम से मनाया जायेगा। जिसमें उच्चकोटि के विद्वान, आचार्य, भजनोपदेशक भाग लेंगे। इस अवसर पर सामवेद पारायण महायज्ञ का अनुष्ठान भी किया जायेगा।

- स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, आचार्य, मो.:-8859827910

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 36वें वार्षिकोत्सव के उपलक्ष्य में

251 कुण्डीय विराट् यज्ञ एवं अखिल भारतीय आर्य महासम्मेलन

दिनांक : 24 से 26 जनवरी, 2015 (शनिवार से सोमवार)

स्थान : कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव (निकट ग्रीन पार्क मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली-29

विराट शोभा यात्रा : शनिवार 24 जनवरी, 2015, प्रात: 10 बजे

शुभारम्भ : कमल पार्क, सफदरजंग एनक्लेव, दिल्ली से प्रारम्भ होगी

इस अवसर पर वेद, संस्कृत रक्षा सम्मेलन, भव्य संगीत संध्या, राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन, शिक्षा संस्कृति रक्षा सम्मेलन सहित अनेकों कार्यक्रम आयोजित किये गये हैं।

24 जनवरी, 2015 को वेद संस्कृत रक्षा सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में वैदिक विद्वान तथा संसद सदस्य डॉ. सत्यपाल सिंह जी पधार रहे हैं। विभिन्न सम्मेलनों में श्री रमेश विधूड़ी संसद सदस्य, डॉ. चन्द्रवीर सिंह, स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, आचार्य अखिलेश्वर जी, डॉ. धर्मपाल आर्य पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार, डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, सचिव संस्कृत अकादमी, श्री करण सिंह तंवर पूर्व विधायक, श्री योगराज चोपड़ा, डॉ. रिखवचन्द जैन, श्री यशपाल आर्य पार्षद, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, राजीव कुमार परम, श्री प्रभात शेखर, आर्य नेता डॉ. अशोक कुमार चौहान, संस्थापक अध्यक्ष एमिटी शिक्षण संस्थान, डॉ. हर्षवर्धन जी, केन्द्रीय विज्ञान व प्रौद्योगिकी मंत्री भारत सरकार, श्री मांगेराम गर्ग, श्री सुभाष आर्य, स्वामी प्रणवानन्द जी, डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा, श्री प्रवीन तायल, श्री ब्रजमोहन लाल मुंजाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, श्री दीनानाथ बत्रा राष्ट्रीय संयोजक शिक्षा बचाओ समिति, डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा, पूर्व संसद सदस्य, डॉ. सुन्दर लाल कथूरिया सहित अनेकों आर्य विद्वान, नेता तथा गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधार कर कार्यक्रम को सफल बनायें।

हजारों की संख्या में पहुंचकर आर्य समाज की विराट् संगठन शक्ति का परिचय दें।

अपील

इस रचनात्मक विशाल कार्यक्रम में आपका तन, मन, धन से सहयोग अपेक्षित है। कृपया दानराशि क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा **''केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली''** के नाम से कार्यालय के पते पर भिजवायें। ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, शुद्ध घी, रिफाईन्ड, सब्जी आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें।

कार्यालय : आर्य समाज, कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी, दिल्ली-7, मो.:-9868661680

- अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

युवा पीढ़ी को सदाचारी बनाना हमारा प्रथम कर्त्तव्य

- स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

आर्य समाज, लाजपतनगर, नई दिल्ली के साप्ताहिक सत्संग दिनांक 30 नवम्बर, 2014 को प्रवचन करते हुए स्वामी सोम्यानन्द जी ने कहा कि वर्तमान में युवक और युवतियां नैतिकता और सदाचार का पालन नहीं कर रहे हैं जिसके कारण अनेक अप्रत्याशित घटनायें घट रही हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में छात्र-छात्राओं को पुस्तक ज्ञान पर ही जोर दिया जाता है। सदाचार और नैतिक शिक्षा का अभाव है। देखने में आता है कि शिक्षक गण भी विद्यार्थियों के सम्मुख धूम्रपान, तम्बाकू भक्षण के साथ ही असभ्य वाणी का प्रयोग करते हैं जिसका प्रभाव विद्यार्थियों पर भी पड़ता है।

छात्र-छात्राओं का पहनावा भी विषय वासनाओं को बढ़ावा देने वाला है जिसके कारण महिलाओं के साथ अनेक दुर्घटनाएं घटित हो रही हैं। शरीर पर वस्त्रों का पहनना शरीर की सुरक्षार्थ और शरीर अंगों के सुगम संचालन में सहायता हेतु होता है, न कि अंग प्रदर्शन हेतु।

अत: माता-पिता का मुख्य कर्त्तव्य है कि वह सामाजिक नियमों का स्वयं पालन करें और अपने पुत्र-पुत्रियों में स्वेच्छाचार को रोकें तभी श्रेष्ठ समाज का निर्माण सम्भव है अन्यथा भविष्य अत्यन्त कष्टकारी सिद्ध होगा।

- आचार्य मेघश्याम, पुरोहित, आर्य समाज, लाजपतनगर, नई दिल्ली

आर्य समाज वैशाली नगर में आर्य कार्यकर्ता सम्मेलन सम्पन्न

जयपुर 4 जनवरी, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का कार्यकर्ता सम्मेलन आर्य समाज, वैशाली नगर में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में संस्कारित मातृशक्ति निर्माण व सम्मान हेतु 10 माह की बालिका 'प्रणवी' का मुण्डन संस्कार सम्पन्न हुआ। परिषद् प्रदेशाध्यक्ष व सम्मेलन अध्यक्ष यशपाल 'यश' ने कहा कि बालिकाओं में आत्म-गौरव, आत्म शक्ति सैन्य, शिक्षा हेतु प्रशिक्षण शिविर लगायेंगे। जातिवादी जहर को मिटाने हेतु आर्य युवक परिषद् अन्तरजातीय विवाहितों का सम्मान कर रही है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि आर्य समाज ने घर वापसी धर्मान्तरण हेतु अनेक बलिदान दिये हैं। आर्य समाज बेटी बचाओ, धर्मान्धता, पाखण्ड मिटाओ अभियान और तीव्र गति से चलायेगा। इस अवसर पर वेदों के उद्भट विद्वान स्व. हरिदत्त शास्त्री षोडशतीर्थ की स्मृति में पुस्तकालय का उद्घाटन उनकी पुत्र वधु व पौत्र गोपाल शर्मा ने किया। दिल्ली से आये राम कुमार सिंह, डॉ. रामपाल, विद्या भास्कर, डॉ. प्रमोद पाल ने भी विचार व्यक्त किये। स्वागताध्यक्ष मोती लाल शर्मा स्वागत मंत्री ईश्वर दयाल माथुर ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य समाज बांगरमऊ का 43 वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज आर्य नगर बांगरमऊ का 43वां वार्षिकोत्सव दिनांक 4 फरवरी, 2015 से 6 फरवरी, 2015 तक मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर आचार्य उमेश जी कुलश्रेष्ठ (उ. प्र.) पं. हरिश्चन्द्र भजनोपदेशक (हि. प्र.), पं. क्षमा पुखार भजनोपदेशिका (उ. प्र.) सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति पधार रहे हैं। अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम को सफल बनायें।

- प्रणव आर्य, मंत्री, मो.:-9415532710

133 वाँ वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद शतकं पारायण यज्ञ सम्पन्न

आर्य समाज अजमेर का 133वां वार्षिकोत्सव 21 से 23 नवम्बर, 2014 तक चार सत्रों में सम्पन्न हुआ। प्रत्येक सत्र में यज्ञ (चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ), भजनों एवं विद्वानों के प्रवचन हुए।

आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार, आर्ष गुरुकुल नोएडा, उत्तर प्रदेश के ब्रह्मत्व में वेदपाठ हेमन्त तिवारी, इन्द्रजीत आर्य, अंकुर आर्य ने किया। इस अवसर पर आचार्य डॉ. जयेन्द्र कुमार ने यज्ञ, श्रद्धा, ओ३म् के झण्डे आदि का जीवन में महत्त्व बताया। सुमधुर भजन बिजनौर के सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक योगेश दत्त आर्य एवं आर्यजगत् की विश्व प्रसिद्ध साध्वी डॉ. उत्तमायति तथा स्थानीय दयानन्द बाल सदन (अनाथालय) की कु. सुमित्रा आर्य, कु. नैना आर्य, कु. नेहा आर्य, ब्रह्मचारी आकाश आर्य, सुरेन्द्र कुमार आर्य, खुशवन्तसिंह आर्य, भूपेन्द्र सिंह आर्य, मुकेश सिंह आर्य ने प्रस्तुत किये।

चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति सत्र प्रधान सर्वश्री प्रो. रासासिंह पूर्व सांसद, वरिष्ठ उपप्रधान सर्वश्री सोमरत्न आर्य, संजय अरोड़ा, रविन्द्र खन्ना आदि सपत्नीक मुख्य यजमान रहे।

आर्य समाज, अजमेर के प्रधान प्रो. रासासिंह पूर्व सांसद ने आर्य समाज अजमेर के इतिहास एवं प्रगति विवरण तथा वार्षिकोत्सव में सहयोग करने वाले दानी महानुभावों, कार्यकर्ताओं एवं समस्त धर्मप्रेमी सज्जनों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

आर्य समाज, अजमेर के मंत्री चिरंजीलाल शर्मा ने वार्षिकोत्सव के समस्त कार्यक्रमों का कुशलतापूर्वक संचालन किया।

- चिरंजीलाल शर्मा, मंत्री

thearyasamaj.org

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 16–17 जनवरी, 2015
प्रकाशन की तिथि : 15 जनवरी, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
15 से 21 जनवरी, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

परमैश्वर्यवान् ईश्वर

विशंविशं मघवा पर्यशायत जनानां धेना अवचाकशद् वृषा।
यस्याह शक्रः सवनेषु रण्यति स तीव्रैः सोमैः सहते पृतन्यतः।।

—ऋ० १०/४३/६

ऋषिः—कृष्ण आङ्गिरसः।। देवता—इन्द्रः।। छन्दः—जगती।।

विनय—नारायण प्रभु प्रत्येक मनुष्य के हृदयकुटीर में आकर लेटे हुए हैं, हम इसे जानते हों या न जानते हों। सबमें चुपके से लेटे हुए ये नारायण प्रत्येक मनुष्य की ज्ञानक्रियाओं को भी साक्षात् देख रहे हैं, बल्कि उन ज्ञानक्रियाओं को अपने प्रकाश से प्रकाशित कर रहे हैं। ये नारायण हममें जागते तब हैं जब इन्हें अपने इस ज्ञान की, अपने श्रेष्ठ–से–श्रेष्ठ ज्ञान की, भेंट चढ़ायी जावे, जब यह सोमरस इन्हें पिलाया जावे। सर्वश्रेष्ठ भक्ति और सर्वश्रेष्ठ सोमसवन तत्त्वज्ञान का निष्पादन ही है। भगवान् इसी के भूखे हैं। इसी के लिए प्रत्येक के अन्दर बैठे उसकी ज्ञानक्रियाओं की निहार रहे हैं। प्रत्येक मनुष्य कुछ–न–कुछ अपना सोमसवन कर रहा है, प्रत्येक मनुष्य कभी–न–कभी विवेक करने, तत्त्वज्ञान के खोजने और ज्ञान का निष्कर्ष निकालने के लिए बाधित होते हैं; अतः वे सबके अन्दर बैठे धैर्य से प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह सच है कि जिसके अन्दर यथेच्छ सोमरस को पाकर वे भगवान् जाग उठते हैं वह निहाल हो जाता है। उसमें ऐसा अद्भुत सामर्थ्य प्रकट होता है कि उसके सामने संसार की कोई भी भक्ति ठहर नहीं सकती। बस, देर यही है कि वे किसी के सोमस्वन को स्वीकार कर लेवें, किसी को अपना लेवें। जिसे वे अपना लेते हैं, वर लेते हैं उसके सामने तो वे अपने सम्पूर्ण सर्वसमर्थ रूप में, अपने सम्पूर्ण 'शक्र' और 'वृषा' रूप में प्रकट हो जाते हैं। सचमुच ज्ञान की सर्वोच्च शक्ति है। ज्ञानी ही संसार के विकट–से–विकट पाप आक्रमणों को सह सकता है। ज्ञान के बिना शैतान की फौजों के सामने कोई नहीं ठहर सकता; 'प्रसंख्यान' के सर्वश्रेष्ठ ज्ञान को भी प्रभु–अर्पण कर देने पर भक्त योगी को अपनी धर्ममेघ समाधि में जो सोम की वर्षा मिलती है उन तीव्र सोमों (उच्च ज्ञानों) के सामने शैतान की सैकड़ों आक्रमणकारी फौजें भी एक क्षण में परास्त हो जाती हैं; सब पाप और क्लेश समाप्त हो जाते हैं।

शब्दार्थ—**मघवा**=परमैश्वर्यवान् ईश्वर। **विशं विशम्**=प्रत्येक मनुष्य में **परि अशायत**=लेटे हुए हैं, चुपके से व्यापे हुए हैं और **वृषा**=वे सुखवर्षक ईश्वर **जनानाम्**=सब मनुष्यों की **धेनाः**=ज्ञानक्रियाओं को **अवचाकशत्**=देख रहे हैं या प्रकाशित कर रहे हैं। **अह**=परन्तु **शक्रः**=ये सर्वशक्तिमान् ईश्वर **यस्य**=जिसके **सवनेषु**=सवनों में, ज्ञान–निष्पादनों में **रण्यति**=रम जाते हैं, इन्हें स्वीकार कर लेते हैं **सः**=वह पुरुष **तीव्रैः सोमैः**=अपने इन तीव्र सोमों द्वारा, महाबली उच्च ज्ञानों द्वारा **पृतन्यतः**=सब आक्रमणकारियों को, बड़े–से–बड़े हमलों को **सहते**=सहता है, जीत लेता है।

साभार– 'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी
परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।